माननीय राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का राष्ट्रीय बालरंग-2014 समारोह में उदबोधन

स्थान:- भोपाल, दिनांक:- 16 जनवरी, 2014, समय:- प्रात: 10.30 बजे

देश के विभिन्न राज्यों से "बालरंग समारोह" में भाग लेने आये सभी बच्चों को मेरा बहुत- बहुत प्यार। बाल रंग समारोह का यह स्वरूप देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है और मैं बहुत अभिभूत हूं। ऐसा लग रहा है जैसे पूरा भारत यहां बस गया है।

भारतीय संस्कृति का सही दर्शन यही है। विविधता में एकता हमारे देश की संस्कृति है। बच्चे देश का भविष्य हैं इसलिए इन्हें बचपन से ही संवारना, संस्कारवान, देश प्रेम और आपसी भाईचारे की भावना से ओतप्रोत करना समाज के सभी वर्गों का नैतिक उत्तरदायित्व है। विभिन्न संस्कृतियों में पल रहे, भिन्न-भिन्न भाषा बोलने वाले इन बच्चों को एक साथ एक मंच पर देखकर देश के उज्जवल भविष्य का सपना सच होता दिखाई दे रहा है।

सांस्कृतिक विरासत ही सही अर्थों में देश की धरोहर है। इसका निरंतर संरक्षण और विकास सुनिश्चित करना सभी देशवासियों की जिम्मेदारी है। क्योंकि आने वाली पीढ़ी अपनी संस्कृति के जिस स्वरूप को देखती है उसी के अनुरूप जीवन के नये मूल्यों का निर्माण करती है। बच्चों को पहली कक्षा से ही सांस्कृतिक और मानवीय मूल्यों से परिचित कराना चाहिए।

बालरंग समारोह में हमारे इन बच्चों ने अपने- अपने क्षेत्र की संस्कृति, रीति-रिवाजों, परम्पराओं, खेलों और परिवेशों का एक जगह ही जीवंत प्रदर्शन किया है।

बच्चों का यह समागम इन बच्चों के साथ-साथ हम बड़ों के लिए भी सुखद और रोमांचकारी है। इस मंच से बच्चे अपनी सभ्यता के साथ साम्प्रदायिक सदभाव की भावना को विकसित कर "वसुधैव कुटुम्बकम" का संदेश "पूरा देश, पूरा विश्व" एक परिवार की तरह के संदेश से परिचित होते हैं।

बालरंग से नैतिक मूल्यों की परोक्ष, प्रत्यक्ष रूप से शिक्षा मिलती है। बालरंग नैतिक मूल्यों को स्थापित करने में बहुत सार्थक सिद्ध हो रहा है।

बचपन गीली मिट्टी की तरह होता है। इस मिट्टी को सही और अच्छा आकार देना अभिभावकों और गुरूजनों का उत्तरदायित्व है। घर में बच्चों को अच्छे संस्कार देने से केवल घर ही नहीं पूरा

समाज संस्कारवान बनेगा। बच्चों को देश के इतिहास से भी अवगत कराया जाना चाहिए। आजादी के मायने भी इन्हें बताने होंगे। घर और समाज में बड़ों का आदर करना और छोटों से प्यार कराना भी सिखाना होगा तभी सुसंस्कृत और संस्कारवान पीढ़ी का निर्माण होगा।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि राष्ट्रीय बालरंग समारोह में पूर्व वर्षों की भांति स्थानीय विद्यालयों, विभिन्न शासकीय विभागों और संस्थाओं द्वारा राज्य स्तरीय लोक एवं पारंपरिक नृत्य एवं विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। समारोह में जन-कल्याणकारी योजनाओं एवं लघु भारत की थीम पर आधारित प्रदर्शनी के अतिरिक्त शारीरिक बाधित, मदरसा और संस्कृत आदि के बच्चों के लिए वाद-विवाद, समूह चर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि विभिन्न प्रतियागिताएं तथा राग-ए-वतन की विशेष प्रस्तुति का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इन सभी कार्यक्रमों प्रदर्शनी और प्रतियोगिता में विजेता बच्चों को मैं बधाई देता हूं। यहां आये सभी बच्चों को उज्जवल भविष्य के लिये मेरी हार्दिक शुभकामनायें। साथ ही, शिक्षा विभाग के वरिष्ठ अधिकारीगण, सम्मानीय अभिभवकगण, विद्वत गुरूजन, माननीय निदेशक, उपस्थित नागरिकगण तथा वरिष्ठ पत्रकारगण को आयोजन में सक्रिय योगदान के लिए हार्दिक धन्यवाद।

जय हिन्द।